अमृत वाणी

विश्वविद्यालय महापुरुषों के निर्माण के कारखाने हैं और अध्यापक उन्हें बनाने वाले कारीगर हैं।

-रवींद्र,

होम्योपैथिक चिकित्सा से हर तरह का इलाज संभव

पूर्व में लोग सर्दी, खांसी अथवा हाथ पैर दर्द जैसे छोटी-मोटी बीमारियों का इलाज होम्योपैथिक से कराया करते थे। ये फिर जब किसी बीमारी के इलाज के प्रति चारों ओर से निराश हो जाते थे तब आखिरी प्रयास के रूप में होम्योपैथिक का सहारा लिया करते थे। ताकि अगर कुछ फायदा हुआ तो ठीक है, अन्यथा नहीं। हालांकि उस समय भी होम्योपैथिक से हर तरह की बीमारियों का इलाज न केवल संभव था बल्कि कई ऐसे इलाज जो एलोपैथिक से संभव न हो वो भी होम्योपैथिक से हो सकता था। चाहे वो बच्चों से संबंधित बीमारी हो, महिलाओं के रोग हो या फिर शरीर के महत्वपूर्ण अंग हार्ट, किडनी, लीवर आदि से संबंधित गंभीर बीमारी अथवा कोई भी लाईलाज बीमारी ही क्यों न हो। एक तो लोगों के होम्योपैथी इलाज की इतनी व्यापकता के बारे में जानकारी नहीं थी और दूसरा लोग उस पर भरोसा नहीं कर पाते थे अतः समय के साथ-साथ एलोपैथिक चिकित्सा का ही चलन और विकास होता गया और लोग उससे जुड़ते गये।

मजेदार बात यह है कि भले ही होम्योपैथी दवाइओं की ओर आकर्षण उतनी तेजी से नहीं बढ़ा परन्तु उसके विकास और शोध आदि में वृद्धि की गति हमेशा ही बरकरार रही । उसी का नतीजा है कि आज तमाम बीमारियों का इलाज चाहे अन्य चिकित्सा पद्धतियों से संभव हो या नहीं, हौम्योपैथी में उसकी पूरी चिकित्सा उपलब्ध है। इतना अवश्य है कि एलोपैथिक चिकित्सा विज्ञान की ओर विद्यार्थी जितनी बड़ी संख्या में आकर्षित हुए उतनी बड़ी संख्या में होम्योपैथी को विद्यार्थी उपलब्ध नहीं हुए। संभवतः इसीलिये ऐलोपैथिक की तुलना में हौम्योपैथिक चिकित्सकों की संख्या बहुत कम है।

हौम्योपैथी चिकित्सा के तमाम लाभ एवं इस चिकित्सा पद्धति से ऐलोपैथी की तुलना में काफी सस्ता होने के बावजूद व्यावसायिक दृष्टि से यह पद्धति अभी भी बहुत पीछे है। इसीलिये युवा इस चिकित्सा पद्धति की ओर बहुत कम आकर्षित होते है। इन सबका सबसे अहम एवं एक मात्र वजह इस चिकित्सा पद्धति के प्रति लोगों में जागरूकता का अभाव है भले ही आर्थिक रूप से कमजोर तबका इस चिकित्सा पद्धति के अत्याधिक कारगर तथा सस्ता होने का सबसे अधिक लाभ उठा सकता है लेकिन इसके बारे में जानकारी और जागरूकता के अभाव में ना तो वह इसके प्रति आकर्षित होता है और न ही इस पर भरोसा कर पाता है।

होम्योपैथी चिकित्सा के प्रति सबसे अधिक भरोसा अगर देखा जाये तो वर्तमान में मध्यम वर्ग के लोग ही करते है। एक तो वे इस चिकित्सा पद्धति को समझते है एवं जानते है तथा उसकी मितव्ययिता का भी लाभ उठाते हैं।

होम्योपैथी वर्तमान में दुनिया की श्रेष्ठ चिकित्सा पद्धतियों में से एक है। अगर उसका उपयोग भी व्यापक स्तर पर होने लगे तो उसकी विकास की गुंजाईश निश्चित तौर पर और बढ़ जायेगी।

अंतर्राष्ट्रीय होम्योपैथिक चिकित्सा के एक मात्र कार्डियोलॉजिस्ट डॉ. आदिल चिमथनवाला एवं भारतीय चिकित्सक डॉ. नीता शर्मा ने भी बताया कि शासन के सहयोग एवं जनजागरूकता से इस चिकित्सा पद्धति का तेजी से विकास संभव है।

ट्रंप का फिजूल भारत पर भारी होना

अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप गज़ब के गैर-जिम्मेदार आदमी हैं। उन्होंने भारत के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी और अफ्गानिस्तान में भारत की भूमिका के बारे में जो कुछ कहा है, वह घोर आपत्तिजनक है। उन्होंने अपने मंत्रिमंडल की बैठक में कह दिया कि मोदी काफी चतुर.चालक आदमी हैं। वे जब मुझसे मिले तो बार.बार मुझसे कहते रहे कि भारत ने अफ्गानिस्तान में एक लायब्रेरी बनाई है। उस लायब्रेरी में वहां कौन जाता होगा। अमेरिका ने वहां जो अरबों डॉलर बहाए हैं, उनके मुकाबले यह भारत का ऐसा काम है, जो पांच.छह घंटे में पूरा हो सकता है। ट्रंप के कहे का अर्थ यह भी है कि लायब्रेरी की बात बार.बार बोलकर मोदी ने बड़ा अहसान जताया और हमसे यह उम्मीद की कि इस महान कार्य के लिए अमेरिका उन्हें धन्यवाद दे।

ट्रंप ने लायब्रेरी की बात कही। यह ट्रंप ही कह सकते हैं। मोदी तो भारत के प्रधानमंत्री हैं। वे ऐसा कह ही नहीं सकते। अफ्गानिस्तान में कार्यरत हमारे अनपढ़ मजदूर भी ऐसी बात नहीं कह सकते। वह लायब्रेरी नहीं है। वह संसद भवन है। अफ्गानिस्तान का संसद भवन ! यह शानदार संसद भवन इंदिराजी के ज़माने में बनना शुरु हुआ था। उस सस्ते ज़माने में इस भवन पर भारत ने करोड़ों रुण् खर्च किए थे। इसके पहले जहां अफ्गान संसद चलती थी, उसमें भी पचास साल पहले कई बार जाने का मौका मुझे मिला था लेकिन यह बात मैं पूरे विश्वास से कह सकता हूं कि भारत का बनाया हुआ अफ्गानिस्तान की संसद का यह भवन उस राष्ट्र की अनमोल धरोहर है। जैसे बादशाह जाहिरशाह के महल ष्काखे.गुलिस्तानष् पर हर अफ्गान को गर्व है, वैसे ही उसे इस संसद भवन पर भी गर्व है। भारतीय इंजीनियरों ने अफ्गान लोकतंत्र का यह नया मंदिर खड़ा किया है। इस संसद भवन को ट्रंप ने पुस्तकालय बताकर और मोदी का मजाक उड़ाकर अपनी भद्द पिटवाई है।

भारत ने अफ्गानिस्तान में लोकतंत्र का मंदिर ही नहीं बनाया है, उसने वहां बच्चों का ऐसा सबसे बड़ा अस्पताल भी दशकों पहले बना दिया था, जिसने लाखों अफ्गान बच्चों को जान बख्शी है। भारत ने अफ्गानिस्तान में अब तक लगभग 25 हजार करोड़ रुण् खर्च किए हैं। इतना पैसा अफ्गानिस्तान के निर्माण.कार्यों में अमेरिका, रुस और चीन ने भी नहीं किया है। भारत ने अफ्गानिस्तान में क्या.क्या नहीं बनाया है घ् बिजलीघर, बिजली की लंबी.लंबी लाइनें, कई बांध, कई नहरें, कई स्कूल, कई पंचायत घर ! सबसे बड़ा निर्माण कार्य हुआ है, ईरान और अफ्गानिस्तान को सीधे सड़क से जोड़ने का। जरंज.दिलाराम सड़क 218 किमी लंबी है। इस पर भारत ने अरबों रुण् खर्च किया है। रुपया ही नहीं, हमने हमारे मजदूरों और जवानों की जिदंगियां भी कुरबान की हैं। तालिबान आतंकियों ने सड़क को बनने से रोकने के लिए उन पर कई हमले किए। इस सड़क ने अफ्गानिस्तान की 200 साल पुरानी मजबूरी को खत्म किया। उसे अब अपने यातायात और आवागमन के लिए पाकिस्तान पर निर्भर रहने की जरुरत नहीं है। अब फारस की खाड़ी से वह सीधे जुड़ गया है। इस सड़क के बारे में प्रधानमंत्री सरदार दाऊद और प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी से मैंने दाऊद की भारत.यात्रा के दौरान 1975 में बात की थी लेकिन यह बनकर तैयार हुई, अटलजी के प्रधानमंत्री काल में। अफ्गानिस्तान के उत्तर में रुस ने और दक्षिण में अमेरिका ने 50.55 साल पहले सड़कों का जाल बिछाया था लेकिन भारत द्वारा निर्मित इस सड़क ने अफ्गानिस्तान जैसे जमीन से घिरे देश को भू.राजनीतिक आजादी प्रदान की है।

अफ्गानिस्तान में हमारे हजारों डॉक्टरोंए इंजीनियरों, शिक्षकों, पत्रकारों, अफसरों और विशेषज्ञों ने पिछले 70 साल मंर इतना जबर्दस्त योगदान किया है कि वहां के कट्टरपंथी लोग भी भारत की तारीफकिये बिना नहीं रहते लेकिन ट्रंप हैं कि वे भारत के प्रधानमंत्री का मजाक उड़ाने का दुस्साहस करते हैं। अफ्गानिस्तान को दी गई भारतीय मदद अंतरराष्ट्रीय राजनीति के इतिहास में अनौखी है। अमेरिका के सिपाही अपनी बख्तरबंद गाड़ियों, बंदूकों, मिसाइलों और तोपों के बावजूद अफ्गानिस्तान के गांवों में जाने से डरते हैं जबकि भारतीय विशेषज्ञ निहत्थे ही गांव.गांव जाकर लोगों की सेवा करते हैं। अफ्गानिस्तान के एक पाकिस्तानपरस्त प्रधानमंत्री ने मुझे 1972 में विस्तार से समझाया था कि हम मुस्लिम राष्ट्र होते हुए भी पाकिस्तान की बजाय भारत के हिंदू सेवादारों को क्यों ज्यादा पसंद करते हैं। ट्रंप अपनी अमेरिकी सेनाओं को सीरिया, अफ्गानिस्तान, कोरिया, प्रशांत आदि क्षेत्रों से लौटा लेना चाहते हैं, यह उनकी अपनी मर्जी है लेकिन उनका यह आग्रह विचित्र है कि भारत, रुस और चीन, जो अफ्गानिस्तान के पड़ौसी हैं, वे वहां अपनी फौजें क्यों नहीं भेजते हम 6000 मील दूर अपनी फौजें क्यों भेजें ट्रंप की यह बात सुनकर मुझे यह कहने का मन करता है कि अमेरिका जैसे महाशक्ति राष्ट्र का राष्ट्रपति होने की बजाय ट्रंप को कोई छोटी.मोटी दुकान चलाना चाहिए। उन्हें अंतरराष्ट्रीय राजनीति का रत्ती भर ज्ञान भी नहीं है। द्वितीय महायुद्ध के आद अमेरिका ने अपनी अर्थव्यवस्था की रक्षा के लिए और अपने वर्चस्व को बढ़ाने के लिए सारी दुनिया में अपना सैन्य.जाल बिछाया था। प्रसिद्ध अमेरिकी विदेश मंत्री जॉन फास्टर डलेस के शब्दों में अमेरिका जब किसी देश पर एक डॉलर खर्च करता है तो वह एक डॉलर, तीन डॉलर बनकर वापस लौटता है। दूसरे देशों में डटे अमेरिकी सैनिक उन.उन देशों के नहीं बल्कि अपने अमेरिकी हितों के लिए भेजे जाते हैं।

जहां तक भारत, रुस और चीन के सैनिकों को अफ्गानिस्तान में भेजने का सवाल है, ट्रंप को पता होना चाहिए कि 20 साल में रुस के 13 हजार सैनिकों को अफ्गान लोग मौत के घाट उतार चुके हैं। इसके अलावा 1842 में ब्रिटेन के सभी 16 हजार सैनिकों को अफ्गानों ने कत्ल कर दिया था। सिर्फएक सिपाही डॉक्टर ब्राइडन जान बचाकर भाग निकला था। जहां तक भारत का सवाल है, भारत भूलकर भी अफ्गानिस्तान में अपने सैनिक कभी नहीं भेजेगा। जनवरी 1981 में मेरे पुराने मित्र प्रधानमंत्री बबरक कारमल ने मुझसे काबुल में आग्रह किया कि मैं किसी तरह इंदिराजी को मनाऊं और भारतीय सैनिकों को काबुल भिजवा दूं ताकि वे रुसी फौजियों को मदद कर सकें। मैंने उन्हें बताया कि यह प्रस्ताव भारत और अफ्गानिस्तान, दोनों के लिए खतरनाक सिद्ध होगा, क्योंकि एक तो पाकिस्तान को कुप्रचार का मौका मिल जाएगा और दूसरा अफ्गानिस्तान के इस्लामी कट्टरपंथी कहेंगे कि बबरक ने यह हिंदुआना.काफिराना फौज हमारी छाती पर चढ़ा दी है। बबरक चुप हो गए और इंदिराजी को यह तर्क काफी पसंद आया। इंदिराजी के बाद के प्रधानमंत्रियों ने भी इसे ही भारतीय नीति बनाया लेकिन अफ्गानिस्तान को भारत यदा.कदा युद्ध सामग्री और उसके जवानों को सैन्य.प्रशिक्षण देते रहा। ट्रंप के पास इतनी फुर्सत नहीं कि वे इन बारीकियों में जा सकें। जहां तक चीन का सवाल है, वह अपने सैनिक अफ्गानिस्तान में किससे लड़ने भेजेगा। क्या पाकिस्तान.पोषित तालिबान से लड़ने के लिए। पाकिस्तान तो चीन की नाक का बाल है। ट्रंप को इतनी मोटी समझ भी नहीं है। ट्रंप ने अफ्गानिस्तान से अपने अमेरिकी सैनिकों की वापसी की नाटकीय घोषणा तो कर दी है लेकिन अभी तक उन्होंने पक्के आदेश जारी नहीं किए हैं। उनका कुछ भरोसा नहीं। वे कब तोला हो जाएं और कब माशा बन जाएंए कौन जाने। वे कब टन भर हो जाएं और कब कन भर हो जाएंए कौन जाने। वे भारत पर फिज़ूल भारी हो रही हैं।

डॉ. वेदप्रताप वैदिक

(ये लेखक के अपने विचार है)

राज-काज

दीनदयाल की जगह अशोक चक्र

गौरतलब है कि विभिन्न राज्यों में भाजपा की सरकार बनते ही जहां कुछ जगहों के नाम बदलकर पंडित दीनदयाल उपाध्याय के नाम पर कर दिए गए वहीं सरकारी दस्तावेजों में उनकी तस्वीरें लगाई जाने लगीं। इसे देखते हुए अब राजस्थान की नवर्निवाचित गहलोत सरकार ने सभी सरकारी दस्तावेजों से दीनदायल की तस्वीर हटाने का आदेश जारी करते हुए कहा है कि सभी सरकारी लेटर पैड पर दीनदयाल अपाध्याय की तस्वीर की जगह अब राष्ट्रीय चिन्ह अशोक चक्र होगा। इस फैसले पर किसी को आपत्ति भी नहीं होनी चाहिए, क्योंकि अशोक चक्र किसी राजनीतिक पार्टी का चिंह भी नहीं है और इसका सम्मान करना प्रत्येक भारतीय की जिम्मेदारी भी बनती है। बहरहाल इससे यह तय हो गया है कि यदि सरकारें बदलती हैं तो काम.काज का ढंग भी बदल जाता है, इसलिए सियासी तौर पर कहा जा रहा है कि इस तरह राजनीतिक विचारधारा की लड़ाई तो आगे भी चलती रहेगी इसमें हैरानी जैसी कोई बात नहीं है। इस बीच सियासी विरोध भी देखने को मिले तो आश्चर्य नहीं होना चाहिए।

मौसमी चटर्जी की सियासत फिर शुरु

अपने जमाने की मशहूर अदाकारा मौसमी चटर्जी के संबंध में खबर है कि वो अब भाजपा में शामिल हो चुकी हैं और आगामी लोकसभा चुनाव में महती भूमिका निभाने वाली हैं। गौरतलब है कि मौसमी चटर्जी ने 2004 में बंगाल से कांग्रेस की टिकट पर चुनाव लड़ा था, लेकिन वो हार गई थीं। इसके बाद उन्होंने मानों राजनीति करने से ही तौबा कर ली थी, लेकिन इतने सालों के बाद वो पुनरू सक्रिय राजनीति में प्रवेश कर रही हैं, बस मंच बदल गया है और इस बार वो कांग्रेस की जगह भाजपा के मंचों पर नजर आने वाली हैं। इस पर उनके विरोधी नेताओं ने कहना शुरु कर दिया है कि एक बार फिर मौसम चुनाव का है इसलिए मौसमी चटर्जी जी मैदान में नजर आने वाली हैं उसके बाद क्या होगा सभी जानते हैं। यह अलग बात है कि मौसमी चटर्जी फिल्म इंडस्ट्री की उन चुनिंदा अभिनेत्रियों में से एक हैं, जिन्होंने शादी और बच्चों के जन्म के बाद फिल्मी दुनिया में कदम रखा और लगातार सफलता के परचम लहराती रहीं।

बांग्लादेश चुनाव परिणाम भाजपा के लिए केस स्टडी

अचानक ऐसा क्या हुआ कि कल तक जो 2019 भाजपा के लिए एक आसान लक्ष्य और विपक्ष के लिए एक असम्भव चुनौती के रूप में एकतरफा खेल दिखाई दे रहा था आज एक रोमांचक युद्ध बन गया। भाजपा का गढ़ कहे जाने वाले तीन राज्य भाजपा के हाथों से फिसल गए। इन राज्यों में भाजपा और कांग्रेस के बीच केवल सत्ता का हस्तांतरण का नहीं बल्कि आत्मविश्वास का भी हस्तांतरण हुआ। वैसे तो आने वाला हर साल अपने साथ उत्साह और उम्मीदों की नई किरणें ले कर आता है, लेकिन यह साल कुछ खास है। क्योंकि आमतौर पर देश की राजनीति में रूचि न रखने वाले लोग भी इस बार यह देखने के लिए उत्सुक हैं कि 2019 में राजनीति का ऊँठ किस करवट बैठेगा। खास तौर पर इसलिए कि 2019 की शुरुआत दो ऐसी महत्त्वपूर्ण घटनाओं से हुई जिसने अवश्य ही हर एक का ध्यान अपनी ओर आकर्षित किया होगा। पहली घटना,साल के पहले दिन मीडिया को दिया प्रधानमंत्री मोदी का साक्षात्कार जिसमें वे स्वयं को एक ऐसे राजनेता के रूप में व्यक्त करते दिखाई दिए जो संवैधानिक और कानूनी प्रक्रिया के साथ ही लोकतंत्र की रक्षा के लिए मजबूत विपक्ष के होने में यकीन करते दिखे।इस दौरान वे अपनी सरकार की नीतियों की मजबूत रक्षा और विपक्ष का राजनैतिक विरोध पूरी ष्विनम्रताष् के साथ करते दिखाई दिए। कहा जा सकता है कि वो अपनी आक्रामक शैली के विपरीत डिफेंसिव दिखाई दिए। और दूसरी घटना थी बांग्लादेश के चुनाव परिणाम। दरअसल अपने पड़ोसी देश बांग्लादेश के हाल के चुनाव नतीजों में शेख हसीना को लगातार तीसरी बार मिली जबरदस्त कामयाबी ने भारतवासियों की ना सिर्फकुछ पुरानी यादों को ताज़ा कर दिया बल्कि शायद इस देश के आम आदमी से लेकर भाजपा के शीर्ष नेतृत्व तक को भी काफी हद तक सोचने के लिए मजबूर किया होगा। क्योंकि लगातार 10 साल तक शासन करने के बाद, विपक्ष के तमाम आरोपों और उनकी कुछ हद तक अलोकतांत्रिक कार्यशैली दबंग सत्तात्मक भी कहा जा सकता है के बावजूद, इन चुनावों में बांग्लादेश की आवाम ने जिस प्रकार शेख हसीना पर अपना भरोसा जताया है और वहाँ विपक्ष का एक प्रकार से सफाया हो गया हैए यह भाजपा और विशेष रूप से नरेंद्र मोदी के लिए एक केस स्टडी हो सकती है।क्योंकि जिस प्रकार वहाँ के लोगों को आज की स्थिति में शेख हसीना के अलावा अपने देश के प्रधानमंत्री के रूप में कोई अन्य चेहरा दूर-दूर तक दिखाई नहीं दे रहाए उसी प्रकार भारत में भी 2014 के चुनाव ही मोदीमय नहीं थे बल्कि उन आम चुनावों के बाद अनेक राज्यों से आने वाले लगभग हर चुनाव परिणाम पूरे देश में मोदी लहर पर अपनी मुहर लगते जा रहे थे। ऐसा लगने लगा था कि मोदि के विजय रथ को रोकना मुश्किल ही नहीं नामुमकिन है। क्योंकि नोटबन्दी और जीएसटी जैसे कठोर निर्णयों के बावजूद जिस प्रकार उत्तरप्रदेश और गुजरात में भाजपा का परचम खुलकर लहराया और अन्य राज्यों में सहयोगियों के साथ मिलकर, उसने जहाँ एक तरफभाजपा के हौसले बुलंद किए वहीं कांग्रेस समेत समूचे विपक्ष को हैरानी और हताशा के उस मोड़ पर ला कर खड़ा कर दिया जहाँ उन्हें यह एहसास होने लगा कि अपने अपने विरोधों को भुलाकर अपने विरोधियों के साथ मिलकर ही उनके लिए मोदी नाम की सुनामी का सामना करने का एकमात्र विकल्प है।

लेकिन फिर अचानक ऐसा क्या हुआ कि कल तक जो 2019 भाजपा के लिए एक आसान लक्ष्य और विपक्ष के लिए एक असम्भव चुनौती के रूप में एकतरफा खेल दिखाई दे रहा था आज एक रोमांचक युद्ध बन गयाघ् भाजपा का गढ़ कहे जाने वाले तीन राज्य भाजपा के हाथों से फिसल गए। इन राज्यों में भाजपा और कांग्रेस के बीच केवल सत्ता का हस्तांतरण का नहीं बल्कि आत्मविश्वास का भी हस्तांतरण हुआ। 2014 के बाद पहली बार मोदी आक्रामक नहीं आत्मरक्षा की मुद्रा में और राहुल आत्मविश्वास से भरे एक नए अवतार में दिखाई दिए।

तो जनाब समझने वाली बात यह है कि कुछ भी ष्अचानकष् नहीं होता। ना ष्मोदी लहरष् अचानक बनी थी और ना ही राहुल का यह नया अवतार। भाजपा जिस मोदी लहर पर सवार होकर सत्ता पर काबिज हुई थी, उस मोदी को पहले एक लहर और फिर सुनामी बनने में 14 साल लगे थे। जी हाँ, और उसकी नींव पड़ी थी 2001 में जब वे पहली बार गुजरात के मुख्यमंत्री बने थे। तब देश तो छोड़ो गुजरात में भी वो कोई बड़ा नाम नहीं थे। लेकिन ये उनकी कार्यशैली ही थी जिसने गुजरात के लोगों को लगातार उन्हें ही मुख्यमंत्री चुनने के लिए विवश कर दिया। और वो मोदी का गुजरात मॉडल था जिसने उनकी कीर्ति पूरे देश में फैलाई। इसी गुजरात मॉडल और मोदी की छवि को भाजपा ने उसे पूरे देश के सामने रखकर 2014 का दाँव खेला जो सफल भी रहा। भाजपा ही नहीं देश को उम्मीद ही नहीं विश्वास था कि गुजरात की तर्ज पर अब दिल्ली की कुर्सी भी 2025 तक बुक है। लेकिन आज वस्तुस्थिति यह है कि 2019 की राह भी कठिन लग रही है। आखिर क्योंघ् इसका विश्लेषण हर राजनैतिक पंडित अपने अपने तरीके से कर रहा है। कोई वोट बैंक के गणित को दोष दे रहा है तो कोई मोदी सरकार की नीतियों को। कोई विपक्षी एकता को दोष दे रहा है तो कोई भीतरघात को। कुल मिलाकर कारण बाहर ही ढूंढे जा रहे हैं भीतर नहीं। जबकि अपनी हार को जीत में वो ही बदल सकता है जो कमियाँ खुद में ढूंढता है परिस्थितियों में नहीं। अब समय कम है लेकिन कुछ बातें जो भाजपा से ज्यादा मोदी जी को समझनी आवश्यक हैं।

यह बात सही है कि भाजपा से वोटर का मोहभंग हुआ है चूंकि 2014 में लोगों ने मोदी को चुना था, भाजपा को नहीं इसलिए यह मोहभंग मोदी से है भाजपा से नहीं। लेकिन इसका कारण राजनैतिक से अधिक मनोवैज्ञानिक है क्योंकि जब किसी लहर के बहाव में बहकर लोग मतदान करते हैं तो वो भावना से प्रेरित होता है राजनीति से नहीं ऐसे में अधिकांश वो दल एकतरफा जीत हासिल करता है जिसके पक्ष में लहर होती है जैसे इंदिरा गांधी और राजीव गांधी की हत्या के बाद कांग्रेस को सहानुभूति लहर का फायदा मिला था और उसने स्पष्ठ बहुमत प्राप्त किया था 2014 में देश में मौजूद मोदी लहर की भावना से भाजपा सत्ता में आई लोगों ने मोदी की आक्रामक एवं एक कट्टर हिंदूवादी कर्मठ प्रशासक छवि को वोट दिया था जो उन्होंने पहले 2001 में गुजरात को भयानक भूकंप से उपजी तबाही और फिर गुजरात को 2002 के दंगों के बाद उपजी अराजकता से उबार कर देश के मानचित्र पर तेजी से उभरती अर्थव्यवस्था वाला प्रदेश बनाकर कमाई थी। लेकिन केंद्र में आते ही मोदी ने पहली गलती अपनी छवि बदलने का प्रयास कर के की। पूरे देश के जनमानस में अपने लिए स्वीकार्यता बनाने के उद्देश्य से ष्सबका साथ सबका विकासष् के नारे से अपनी कट्टर हिंदूवादी की छवि से बाहर निकलने का प्रयास किया। इसके बजाए अगर वो अपनी ष्उसी छवि के साथ सबका विकास करते तो उन्हें कहीं बेहतर परिणाम मिलते। देश ने जब मोदी को चुना था तो देश की उनसे बहुत अपेक्षाएँ थीं जिन्हें उन्होंने भी ष्अच्छे दिन आने वाले हैं के नारे से काफी बढ़ा दिया था। लेकिन उन्होंने दूसरी गलती यह की, कि लोगों की अपेक्षाएं पूरी करने के बजाए उनसे अपेक्षाएँ करने लगे ;कि वे उनके कठोर निर्णयों में उनका साथ दें। लोगों ने भी विपक्ष की आशा के विपरीत नोटबन्दी और जीएसटी जैसे कठोर निर्णयों के बावजूद मोदी की झोली उत्तरप्रदेश हरियाणा और गुजरात में भर दी। देश मोदी की अपेक्षाओं पर खरा उतरता गया और मोदी मदमस्त होते गए। लेकिन यह भूल गए कि उन्हें भी देश की अपेक्षाओं पर खरा उतरना है। वो अपने पारंपरिक वोट बैंक को टेकेन फॉर ग्रांटेड लेते गएए यह उनकी तीसरी और सबसे बड़ी भूल थी।

डॉ नीलम महेंद्र

(ये लेखक के अपने विचार है)

जनता की नाराजगी को अपनी लोकप्रियता समझने की भूल करते नेता

तीन राज्यों के विधानसभा चुनाव में भाजपा को सत्ता से हाथ धोना पड़ा। छत्तीसगढ़ एवं मध्यप्रदेश में 15 साल से भाजपा का राज था। छत्तीसगढ़ में भाजपा, जनता की नाराजगी के तूफान में उड़ गई। वहीं मध्यप्रदेश एवं राजस्थान में कांग्रेस नेताओं की गुटबाजी, टिकट वितरण और बगावत के कारण रो.धोकर सत्ता के सिंहासन में पहुंची। इसके बाद भी मप्र एवं राजस्थान में मुख्यमंत्री एवं मंत्रीपद को लेकर नेताओं के बीच में जो झीना.झपटी देखने को मिली। उससे यही कहा जा सकता है कि जिस तरह जनता भ्रम में जीने विवश होती है। नेता इससे भी बड़ी मूर्खता करते है। वह जनता की नाराजगी को अपनी लोकप्रियता समझकर अपने आपको सर्वमान्य समझने की भूल कर बैठते है। जिसके कारण उनका पूरा राजनैतिक भविष्य दांव पर लग जाता है। मण्प्रण् राजस्थान में कांग्रेस नेताओं और उनके समर्थकों ने चुनाव परिणाम आने के बाद मुख्यमंत्री पद को लेकर, अपने समर्थकों को मंत्री बनवाने को लेकर, जिस तरह गुटबाजी का प्र्दर्शन किया है। उससे लगता है कि कांग्रेस के नेता पिछले वर्षों का सबक भूल गए है। कुछ इसी तरह की स्थिति उण्प्रण् में सपा और बसपा नेताओं के मुगालते को देखने से लग रहा है। 3 उपचुनाव जीत जाने से इनका अंहकार सिर चढ़कर बोलने लगा है। जिसके कारण यह अपनी खिचड़ी अलग पकाने की सोच रहे है। जनता ने वर्ष 2014 के लोकसभा चुनाव में नरेंद्र मोदी पर विश्वास किया था। वह जो बोल रहे है, वह करके दिखायेंगे। राजनैतिक व्यवस्था एवं राजनेताओं के खिलाफजनता में गुस्सा था, नरेंद्र मोदी ने चुनाव प्रचार के दौरान लोगों को विश्वास दिलाया था। उनके नेतृत्व में पूर्ण बहुमत की सरकार बनेगी, तो 60 माह के अंदर वह कायाकल्प कर देंगे। विदेशों में जमा कालाधान भारत वापस लेकर आयेंगे। भ्रष्टाचार खत्म हो जायेगा, किसानों को उत्पादन लागत का डेढ़ गुना पैसा मिलेगा। किसान आर्थिक रूप से समृद्ध होगा। करोड़ों युवाओं को रोजगार मिलेगा। सीमा पार शांति होगी। बलात्कार एवं महिलाओं को उत्पीड़न बंद होगा। शांति व्यवस्था बहाल होगी। देश में कानून का राज होगा। 2014 में नरेंद्र मोदी की लोकप्रियता चरम पर थी। क्योंकि कांग्रेस शासन काल से लोगों का भरोसा उठ गया था। नरेंद्र मोदी ने जो भरोसा आम लोगों में जगाया था, उससे 30 वर्ष बाद केंद्र में भाजपा को स्पष्ट बहुमत मिला। प्रधानमंत्री बनने के बाद नरेंद्र मोदी एवं भाजपा को भ्रम हो गया, कि जनता के पास उन्हें चुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं है। पिछले वर्षों में मोदी सरकार ने नोटबंदी, जीएसटी, मंहगाई, बेरोजगारी, किसानों के कर्ज, किसानों द्वारा आत्महत्या करने, बेरोजगारों को रोजगार उपलब्ध नहीं करा पाने के बाद भी, यह भ्रम बना हुआ है, कि विपक्ष बिखरा हुआ है। मंदिर मुद्दे पर धुर्वीकरण करके और विपक्ष को एक जुट नहीं होने देकर वह 2019 में पुनरू लोकसभा चुनाव जीत लेंगे। यही भ्रम 1977 में इंदिरा गांधी ने पाला था। 1989 में मंडल और कमंडल की राजनीति भी इसी भ्रम का परिचायक थी। 2003 में मध्यप्रदेश के पूर्व मुख्यमंत्री दिग्विजय सिंह ने भी यही भ्रम पाला था। 2004 के लोकसभा चुनाव में अटल बिहारी वाजपेयी सरकार और प्रमोद महाजन ने भी इंडिया साइनिंग का भ्रम पाला था। 2003 में मध्यप्रदेश विधानसभा का चुनाव जीतने के बाद पूर्व मुख्यमंत्री उमा भारती ने भी यही भ्रम पाला था।

सनत जैन

(ये लेखक के अपने विचार है)